

# आध्यात्मिकता की इस्लामी अवधारणा

रेटगि:

वविरण:

श्रेणी: [लेख इस्लाम की मान्यताएं इस्लाम क्या है](#)

द्वारा: Abul Ala Maududi (taken from islammessage.com)

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतमि बार संशोधति: 09 Nov 2021

इसका उत्तर देने के लिए आध्यात्मिकता की इस्लामी अवधारणा और अन्य धर्मों और वचिरधाराओं के बीच के अंतर का ध्यानपूर्वक अध्ययन करना आवश्यक है। इस अंतर की स्पष्ट समझ के बिना अक्सर ऐसा होता है कि, इस्लाम में आध्यात्मिकता के बारे में बात करते समय, 'आध्यात्मिक' शब्द से जुड़ी कई अस्पष्ट धारणाएं अनजाने में दमिाग में आती हैं; तब कसिी के लिए यह समझना मुश्कलि हो जाता है कि इस्लाम की यह आध्यात्मिकता न केवल आत्मा और शरीर के द्वैतवाद से परे है, बल्कि जीवन की एकीकृत और संयुक्त अवधारणा का केंद्र है।



## शरीर-आत्मा का संघर्ष

जसि वचिर ने दार्शनकि और धार्मकि वचिरों के वातावरण को सबसे अधिक प्रभावति कयिा है, वह यह है कि शरीर और आत्मा परस्पर वरिधी हैं, और केवल एक दूसरे की कीमत पर वकिसति हो सकते हैं। आत्मा के लिए, शरीर एक कारागार है और दैनकि जीवन की गतविधियिों बंधन हैं, जो इसे बंधन में रखती हैं और इसके वकिस को रोकती हैं। इसने अनविर्य रूप से ब्रह्मांड को आध्यात्मकि और धर्मनरिपेक्ष में वभिाजति कर दयिा है।

जनि लोगों ने धर्मनरिपेक्ष मार्ग चुना, वे आश्वस्त थे कवि आध्यात्मिकता की मांगों को पूरा नहीं कर सकते, और इस प्रकार उन्होंने अत्यधिक भौतिक और सुखवादी जीवन व्यतीत किया। सांसारिक गतिविधियों के सभी क्षेत्र, चाहे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक या सांस्कृतिक, आध्यात्मिकता के प्रकाश से वंचित थे; अन्याय और अत्याचार इसका परिणाम था।

इसके विपरीत, जो लोग आध्यात्मिक उत्कृष्टता के मार्ग पर चलना चाहते थे, वे खुद को दुनिया से 'महान बहिष्कृत' के रूप में देखने लगे। उनका मानना था कि आध्यात्मिक विकास के लिए 'सामान्य' जीवन के अनुकूल होना असंभव था। उनके विचार में आत्मा के विकास और पूर्णता के लिए शारीरिक आत्म-त्याग और मांस का वैराग्य आवश्यक था। उन्होंने आध्यात्मिक अभ्यास और तपस्या का आविष्कार किया जिसने शारीरिक इच्छाओं को मार डाला और शरीर की इंद्रियों को सुस्त कर दिया। वे जंगलों, पहाड़ों और अन्य एकान्त स्थानों को आध्यात्मिक विकास के लिए आदर्श मानते थे क्योंकि जीवन की हलचल उनके ध्यान में बाधा डालती थी। वे संसार से विमुख होने के विना आध्यात्मिक विकास की कल्पना नहीं कर सकते थे।

शरीर और आत्मा के इस संघर्ष के परिणामस्वरूप मनुष्य की पूर्णता के लिए दो अलग-अलग आदर्शों का विकास हुआ। एक यह था कि मनुष्य को हर संभव भौतिक सुख-सुविधाओं से घिरा होना चाहिए और खुद को एक जानवर के अलावा और कुछ नहीं समझना चाहिए। पुरुषों ने पक्षियों की तरह उड़ना, मछली की तरह तैरना, घोड़ों की तरह दौड़ना और भेड़ियों की तरह आतंकित करना और नष्ट करना भी सीखा लेकिन उन्होंने यह नहीं सीखा कि महान इंसानों की तरह कैसे रहना है। दूसरा यह था कि इंद्रियों को न केवल वश में किया जाना चाहिए और न ही जीत लिया जाना चाहिए, बल्कि अतिरिक्त-संवेदी शक्तियों को जागृत किया जाना चाहिए और संवेदी दुनिया की सीमाओं को दूर किया जाना चाहिए। इन नई वजियों के साथ पुरुष शक्तिशाली वायरलेस सेट जैसी दूर की आवाजें सुन सकेंगे, दूर की वस्तुओं को देख सकेंगे जैसे कोई दूरबीन से करता है, और ऐसी शक्तियाँ विकसित करता है जिसके माध्यम से उनके हाथ का स्पर्श या एक गुजरती नजर गैर-उपचार योग्य को ठीक कर देती है।

इस्लामी दृष्टिकोण इन दृष्टिकोणों से मौलिक रूप से भिन्न है। इस्लाम के अनुसार, ईश्वर ने इस दुनिया में मानव आत्मा को अपना खलीफा (उपाध्यक्ष) नियुक्त किया है। उन्होंने इसे एक निश्चित अधिकार के साथ नियुक्त किया है, और इसे कुछ ज़िम्मेदारियाँ और दायित्व दिया है, जैसे उन्होंने सबसे अच्छे और सबसे उपयुक्त भौतिक फ़्रेम के साथ संपन्न किया है। शरीर को आत्मा के अधिकार और अपने कर्तव्यों और ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के एकमात्र उद्देश्य के लिए बनाया गया है। शरीर आत्मा के लिए कारागार नहीं है, बल्कि उसकी कार्यशाला या कारखाना है; और अगर आत्मा को विकसित करना है, तो इस कार्यशाला के माध्यम से ही किया जा सकता है। नतीजतन, यह दुनिया सजा का स्थान नहीं है जिसमें मानव आत्मा दुर्भाग्य से खुद को पाती है, बल्कि एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें

ईश्वर ने उसे काम करने और उसके प्रति अपना कर्तव्य करने के लिए भेजा है।

इसलिए आध्यात्मिक विकास को इस कार्यशाला से मुंह मोड़ने वाला व्यक्ति नहीं बनना चाहिए और न ही इससे पीछे हटना चाहिए। बल्कि, मनुष्य को उसमें रहना चाहिए और उसमें काम करना चाहिए, और अपना सर्वश्रेष्ठ हिसाब देना चाहिए, जो वह कर सकता है। यह उसके लिए एक परीक्षा की प्रकृति में है; जीवन का हर पहलू और क्षेत्र एक प्रश्न पत्र है: घर, परिवार, पड़ोस, समाज, बाजार-स्थान, कार्यालय, कारखाना, स्कूल, कानून अदालतें, पुलिस स्टेशन, संसद, शांति सम्मेलन और युद्धक्षेत्र, सभी प्रश्न पत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनका उत्तर देने के लिए मनुष्य को भेजा गया है। यदि वह अधिकांश उत्तर-पुस्तिका को खाली छोड़ देता है, तो वह परीक्षा में विफल हो जाएगा। सफलता और विकास तभी संभव है जब मनुष्य अपना पूरा जीवन इस परीक्षा में लगा दे और सभी प्रश्न पत्रों का उत्तर देने का प्रयास करे।

इस्लाम जीवन के तपस्वी दृष्टिकोण को खारजि करता है और नदिा करता है, और मनुष्य के आध्यात्मिक विकास के लिए तरीकों और प्रक्रियाओं का एक संग्रह प्रस्तावित करता है, इस दुनिया के बाहर नहीं बल्कि इसके अंदर ही। आत्मा के विकास के लिए वास्तविक स्थान जीवन के बीच में है, न कि आध्यात्मिक सीतनदिरा (हाइबरनेशन) के एकान्त स्थानों में है।

## आध्यात्मिक विकास का मानदंड

अब हम चर्चा करेंगे कि इस्लाम आत्मा के विकास या क्षय को कैसे आंकता है। ईश्वर के उपाध्यक्ष (खलीफा) के रूप में, मनुष्य अपनी सभी गतिविधियों के लिए उसके प्रति जिवाबदेह है। ईश्वर की इच्छा के अनुसार उसे जो भी शक्तियाँ दी गई हैं, उसका उपयोग करना उसका कर्तव्य है। उसे ईश्वर की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए उसे प्रदान की गई सभी क्षमताओं का पूरा उपयोग करना चाहिए। अन्य लोगों के साथ अपने व्यवहार में उसे इस तरह से व्यवहार करना चाहिए कि वह ईश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास करे। संक्षेप में, उसकी सारी ऊर्जा को इस दुनिया के मामलों को उस तरह से वनियमति करने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए जिस तरह से ईश्वर उन्हें वनियमति करना चाहते हैं। जम्मेदारी, आज्ञाकारिता और नम्रता की भावना के साथ, और प्रभु की प्रसन्नता की खोज के उद्देश्य से एक व्यक्ति जितना बेहतर होगा, वह ईश्वर के उतना ही नजिक होगा। इस्लाम में, आध्यात्मिक विकास ईश्वर से नजिकता का पर्याय है। इसी प्रकार, यदि वह आलसी और अवज्ञाकारी है, तो वह ईश्वर के नजिक नहीं पहुंच पाएगा। और ईश्वर से दूरी इस्लाम में मनुष्य के आध्यात्मिक पतन और नाश का प्रतीक है।

इसलिए इस्लामी दृष्टिकोण से, धार्मिक व्यक्ति और धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति की गतिविधिका क्षेत्र समान है। न केवल दोनों एक ही क्षेत्र में काम करते हैं, बल्कि धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति की अपेक्षा धार्मिक व्यक्ति अधिक उत्साह से कार्य करता है। धार्मिक व्यक्ति उतना ही सक्रिय होगा जितना कि वास्तव में दुनिया का आदमी अपने घरेलू और सामाजिक जीवन में अधिक सक्रिय है, जो घर की सीमा से लेकर बाजार चौक तक और यहां तक कि अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों तक फैला हुआ है।

उनके कार्यों में जो अंतर होगा वह होगा ईश्वर के साथ उनके संबंधों की प्रकृति और उनके कार्यों के पीछे के उद्देश्य। एक धार्मिक व्यक्ति जो कुछ भी करेगा, इस भावना के साथ करेगा कि वह ईश्वर के प्रति जिवाबदेह है, कि उसे ईश्वरीय आनंद प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए, कि उसके कार्य ईश्वर के नियमों के अनुसार होने चाहिए। एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति ईश्वर के प्रति उदासीन रहेगा और अपने कार्यों में केवल अपने व्यक्तिगत उद्देश्यों से ही निर्देशित होगा। यह अंतर धार्मिक व्यक्ति के पूरे भौतिक जीवन को पूरी तरह से आध्यात्मिक उद्यम बनाता है, और एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति का पूरा जीवन आध्यात्मिकता की चिंगारी से रहति अस्तित्व बनाता है।

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/index.php/hi/articles/10033>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।